

|    |   |    |
|----|---|----|
| 36 | ε]ΙΣ ΤΟΝ ΚΟΣΜΟΝ ΕΛΗΛΥΘΑ ἵΝΑ ΠΑΣ Ο ΠΙ-               | 28 |
| 37 | ΣΤΕΥΩΝ ΕΙΣ ΕΜΕ ΕΝ ΤΗ [σ]ΚΟΤΙΑ Μ[η μεινη             | 29 |
| 38 | <sup>47</sup> ΚΑΙ ΕΑΝ ΤΙΣ ΜΟΥ ΑΚΟΥΣΗ [των ρ]ΗΜ[ατων | 28 |
| 39 | ΚΑΙ ΜΗ ΦΥΛΑΞΗ ΕΓΩ ΟΥ [κρι]ΝΩ ΑΥΤΟΝ                  | 26 |
| 40 | ΟΥ ΓΑΡ ΗΛΘΟΝ ἵΝΑ Κ[ρινω] ΤΟΝ ΚΟΣΜΟΝ                 | 27 |

*Ende der Seite korrekt*

*Text:*

*Blatt 62 → Joh 12,33-47*

*Beginn der Seite korrekt*

|    |  |
|----|--|
| 01 | -νάτω ἤμελλεν ἀποθνήσκειν. <sup>12,34</sup> ἀπεκρί-          |
| 02 | θη οὖν αὐτῷ ὁ ὄχλος, Ἡμεῖς ἠκούσαμεν                         |
| 03 | ἐκ τοῦ νόμου ὅτι ὁ Χριστὸς μένει εἰς τὸν αἰ-                 |
| 04 | ῶνα, καὶ πῶς λέγεις σὺ δεῖ <sup>2</sup> ὑψωθῆναι             |
| 05 | τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου <sup>3</sup> ; <sup>35</sup> εἶπεν οὖν |
| 06 | αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, Ὡς ἐτι μικρὸν χρόνον τὸ φῶς                 |
| 07 | ἐν ὑμῖν ἐστίν. περιπατεῖτε ὡς τὸ φῶς                         |
| 08 | ἔχετε, ἵνα μὴ σκοτία ὑμᾶς καταλάβῃ·                          |
| 09 | καὶ ὁ περιπατῶν ἐν τῇ σκοτίᾳ οὐκ οἶδεν                       |
| 10 | ποῦ ὑπάγει. <sup>36</sup> ὡς τὸ φῶς ἔχετε, πιστεύε-          |
| 11 | τε εἰς τὸ φῶς, ἵνα υἱοὶ φωτὸς γένη-                          |
| 12 | σθε. Ταῦτα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς <sup>4</sup> , καὶ ἀπελθὼν      |
| 13 | ἐκρύβη ἀπ' αὐτῶν. <sup>37</sup> Τοσαῦτα δὲ αὐτοῦ ση-         |
| 14 | μεῖα πεποιηκότος ἔμπροσθεν αὐτῶν                             |
| 15 | οὐκ ἐπίστευον εἰς αὐτόν, <sup>38</sup> ἵνα ὁ λόγος Ἰσαΐου    |

<sup>2</sup> Standardtext: ὅτι δεῖ.

<sup>3</sup> Standardtext: ἀνθρώπου; τίς ἐστίν οὗτος ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου;

<sup>4</sup> Standardtext: Ἰησοῦς.